# पाठ 28

# अभिभावकत्व : जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार

**आज का किशोर कल का अभिभावक है। तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में माता–पिता की सकारात्मक व जिम्मेदारी पूर्ण भूमिका बनती जा रही है। परिवार के सभी सदस्यों का चहुँमुखी विकास करने में जीवन कुशलताओं का योगदान है।**

हमारी सामाजिक संरचना में कुछ विशेष प्रकार की भूमिकाएँ और दायित्व माता–पिता के लिए पूर्व निर्धारित हैं। माता–पिता की ये भूमिकाएँ पालन–पोषण के तरीकों में साफ झलकती हैं। हम स्वयं भी अपने माता–पिता को देखते हैं तथा अपनी एक सोच विकसित करते हैं। हमें कई बार अपने माता–पिता में कमी नजर आने लगती हैं, कई बार मित्र के माता–पिता अच्छे लगने लगते हैं। आखिर ऐसा क्या है जिसके कारण यह अन्तर नजर आता है ?

किशोर–किशोरी का व्यक्तित्व जिस रूप में हमारे सामने दिखाई देता है उसको समझने के लिए आवश्यक है कि हमें बचपन से लेकर किशोर बनने तक की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया में होने वाले शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक एवं सामाजिक परिवर्तनों और उनके प्रभावों को समझें। यदि थोड़ा ध्यान दें तो लगेगा कि बच्चों के विकास में माता–पिता की समझ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कई बार अभिभावक जाने या अनजाने में अपने अनुभवों, इच्छाओं, रुचियों आदि को बच्चों पर थोप देना चाहते हैं या फिर अपने परिवार के लिए कुछ विशेष नियम व कायदे बना लेते हैं। वे अपेक्षा करते हैं कि बच्चे उनके द्वारा निर्धारित मार्ग पर ही चले परन्तु आवश्यक नहीं है कि अभिभावकों के निर्देश हमेशा ही बच्चों के विकास में उचित हों और योगदान करें। कई बार इनके कारण बच्चा अपने विचार, अपने निर्णय एवं रुचियों को निर्धारित करने में 'स्वतन्त्र समझ' नहीं बना पाता। इसलिए उसका विकास तर्क पूर्ण ढंग से नहीं हो पाता जिसका नतीजा यह होता है कि बच्चा किशोर होने पर भी अपनी स्थिति को समझ नहीं पाता तथा उसकी छोटी–छोटी बातों पर माता–पिता से नोंक–झोंक व तकरार होती रहती है। घर से बाहर जाते समय कौन से कपड़े पहनें, बाल कैसे कटवाएँ, देर रात्रि तक मित्रों के साथ रहना, देरी हो जाने पर माता–पिता को सफाई देना, माता–पिता द्वारा दूसरे बच्चों से तुलना करना इत्यादि तकरार के प्रमुख कारण होते हैं। इनका नतीजा तनाव, अकारण क्रोध, असहयोग की भावना, चिड़चिड़ापन होता है। किशोर–किशोरियाँ आजादी चाहते हैं और माता–पिता व अन्य बड़े लोग उन पर नियन्त्रण चाहते हैं। एक पक्ष एकान्त चाहता है और दूसरा पक्ष उन पर नजर रखना चाहता है। वे अपने फैसले खुद करना चाहते हैं जबकि माता–पिता को यह भय होता है कि अनुभव नहीं होने की वजह से कहीं वे किसी झंझट में न पड़ जाएँ। यह टकराहट चलती रहती है।

**चित्र 28.1**

विशेषज्ञों का कहना है कि माता–पिता थोड़ी सहन–शक्ति रखें। किशोर व किशोरियों को निर्णय लेने की स्वतन्त्रता दें, हाँ उन पर निगरानी जरूर रखें पर जहाँ तक हो सके उनके लिए बाधा न बनें तो उन किशोर–किशोरियों का विकास ज्यादा अच्छा होगा उन्हें यह महसूस हो कि उनके माता–पिता उन्हें प्यार करते हैं और जरूरत पड़ने पर उन्हें सहारा प्रदान करेंगे। ऐसा देखा गया है कि जिन परिवारों में माता–पिता और किशोर किशोरियों के बीच आपसी बातचीत का सुखद वातावरण रहता है, उन परिवारों में आपसी सामंजस्य और स्वावलम्बन की भावना अधिक देखने को मिलती है।

एक मनोवैज्ञानिक से जब यह पूछा गया कि बच्चों को कितनी आजादी देनी चाहिए तो उनका जवाब था कि पूर्ण स्वतन्त्रता की अपेक्षा उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने की आजादी देनी चाहिए। माता–पिता की भूमिका एक नट के समान होनी चाहिए जो अपने बच्चों को रस्से पर चढ़ा कर उन्हें करतब दिखाने के लिए पूर्ण आजादी दे देता है। परन्तु स्वयं उस रस्से के नीचे चलते हुए पूरा ध्यान रखता है जैसे ही बच्चे का पाँव कहीं फिसले वह उसे सम्भाल ले। यही व्यवहार हमें हमारे बच्चों के साथ रखना चाहिए उन्हें सोचने, बोलने और

करने की आजादी देनी चाहिए, साथ ही उनका ध्यान रखना चाहिए।

समाज की संरचना में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। संयुक्त परिवार की जगह छोटे परिवार ले रहे हैं, जिनके कारण बच्चों की सारी जिम्मेदारी सिर्फ माता–पिता पर आ गई है। चूँकि सारी जिम्मेदारी माता एवं पिता पर है तो निश्चित है कि उनके पास समय की कमी होगी। ऐसी स्थिति में आवश्यक हो जाता है कि हम परिवार में अपनी भूमिका पर पुनर्विचार करें। पिता की जिम्मेदारी केवल बच्चे के जन्म तक ही नहीं है, अपितु बच्चे का पालन–पोषण करना भी माता–पिता की समान जिम्मेदारी है। आपके आस–पास ऐसे परिवार होंगे, जो काम के असमान बँटवारे के कारण हमेशा काम के बोझ से परेशान रहते हैं। साथ ही, ऐसे परिवार भी होंगे जिनमें सभी मिलजुल कर कार्य करते हैं तथा उन्हें किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता।

**चित्र 28.2**

अधिकांशतः परम्परागत मान्यताओं और रूढ़ियों के आधार पर परिवार में पति एवं पत्नी के कार्यों का विभाजन स्वतः किया हुआ होता है, चाहे वह न्याय संगत नहो। कई बार इस विभाजन में बच्चों की उपेक्षा हो जाती है और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में नहीं रखा जाता। पति मुख्यतः आर्थिक एवं परिवार के मुख्य निर्णय लेता है जैसे – बच्चों की संख्या, पढ़ाई, पालन–पोषण यहाँ तक कि परिवारों में बच्चों के विवाह का निर्णय भी स्वयं ही लेता है। इसी प्रकार पत्नी घर के कार्य साफ–सफाई, खाना बनाना, पानी भरना, कपड़े धोना, बच्चों को नहलाना इत्यादि अपनी जिम्मेदारी समझती है। दोनों का परस्पर संवाद अच्छा हो तथा दोनों बैठकर निर्णय करें कि बच्चों की पढ़ाई, खान–पान, रुचि, इच्छाओं आदि की पूर्ति कैसे करनी है, तो परिवार में घर व बाहर की सभी छोटी–बड़ी जिम्मेदारियों को मिलकर सँभालने से आपसी सामंजस्य स्थापित कर एक आदर्श पति–पत्नी की भूमिका का निर्वहन किया जा सकता है। ऐसा करने से घर का वातावरण अच्छा होगा तथा बच्चों में डर व असुरक्षा का भाव पैदा नहीं होगा। सभी एक दूसरे का सम्मान करें, परस्पर सलाह कर एकमत हों अर्थात् अनावश्यक रूप से कोई स्वयं का निर्णय और सोच किसी पर थोपने का प्रयास नहीं करें, इससे सभी विपरीत परिस्थितियों में एक दूसरे को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

**महत्त्वपूर्ण बिन्दु**

- बच्चों के विकास में माता–पिता का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।
- हमें अपने भावी जीवन में जिम्मेदार माता–पिता बनने के लिए उनकी भूमिकाओं और दायित्वों को भली–भाँति समझना चाहिए।

## जानें, समझें और करें

**1.** इस पाठ को पढ़ने के दौरान दिमाग में बहुत से विचार आये होंगे। यहाँ हम अपने आपको अपने से विपरीत स्थिति में रख कर देखते हैं और निम्नलिखित सवालों के जवाब खोजते हैं –

• लड़कों के लिए

– यदि आप पत्नी होते तो अपने पति से अपने लिए क्या अपेक्षाएँ रखते ?

.....

.....

.....

• लड़कियों के लिए

– यदि आप पति होतीं तो अपनी पत्नी से अपने लिए क्या अपेक्षाएँ रखतीं ?

.....

.....

.....

**2.** नीचे लिखे कार्यों में से जिसकी जिम्मेदारी है, उस पर सही का (✓) निशान लगाइए –

| क्र.सं. | प्रश्न | पति की | पत्नी की | दोनों की |
|---|---|---|---|---|
| 1. | बच्चे को नहलाना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 2. | बच्चे को स्कूल का कार्य करवाना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 3. | बच्चे को कपड़े पहनाना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 4. | बच्चे को समय पर टीके लगवाना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 6. | अभिभावक बैठक में बच्चे के स्कूल जाना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 7. | बच्चे को स्कूल छोड़ना किसकी जिम्मेदारी है ? | | | |
| 8. | रोते बच्चे को चुप करना किसका कार्य है ? | | | |
| 9. | बिस्तर बिछाना व उठाना किसका कार्य है ? | | | |
| 10. | स्कूटर, मोटर साइकिल, कार चलाना किसका काम है ? | | | |
| 11. | बैंक, डाकघर, पंचायत सम्बन्धी कार्य करना किसका काम है ? | | | |
| 12. | बीमार होने पर अस्पताल ले जाना किसका काम है ? | | | |

**3.** पति–पत्नी एक दूसरे से कई अपेक्षाएँ रखते हैं।
निम्नलिखित सूची में से पति और पत्नी की अपेक्षाओं का चयन करके लिखिए –
( एक ही अपेक्षा दोनों से भी हो सकती है।)

चित्र 28.3

- घर का काम–काज समय पर करना।
- घर का काम–काज कुशलता पूर्वक करना।
- कार्य में सहयोग प्रदान करना।
- बच्चों के पालन–पोषण में जिम्मेदारी।
- व्यावसायिक उत्थान में सहयोग देना।
- माता–पिता का ध्यान रखना।
- अन्य –

| **पति से अपेक्षाएँ** | **पत्नी से अपेक्षाएँ** |
|---|---|
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |

***बालक की प्रथम पाठशाला, माता का प्यार और पिता का दुलार है। – मिकेन्जी***

***अपनी शक्ति के अनुसार उत्तम खाद्य पदार्थ देने, अच्छे बिछौने पर सुलाने, उबटन आदि लगाने, सदा प्रिय बोलने तथा पालन–पोषण करने और सर्वदा स्नेहपूर्ण व्यवहार के द्वारा माता–पिता बालक के प्रति जो उपकार करते हैं, उसका बदला सरलता से नहीं चुकाया जा सकता। – वाल्मीकि***